टिप्पणी

2

सातवीं से बारहवीं शताब्दी तक कला का इतिहास तथा मूल्यांकन

गुप्तकाल के बाद का समय भारतीय इतिहास में मन्दिर वास्तुकला तथा मूर्तिकला की प्रगति का युग कहलाता है। **पल्लव, चोल,** दक्षिण में **होयसल** तथा पूर्व में **पाल, सेन** और **गंगेज** वंशों ने इस प्रगति को सहेजा तथा इसे प्रोत्साहन दिया। दक्षिण में **महाबलीपुरम** अथवा **मामल्लपुरम** में **पंचरथ** तथा **मण्डप** ढांचे देखने को मिलते हैं। जहां पल्लव तथा उनके विरोधी पश्चिमी चालुक्य वास्तुकला संबंधी क्रियाओं के लिए याद किए जाते हैं, वहीं चोल तथा होयसल अपने मन्दिर सम्बन्धी शिल्पकला के लिए हमेशा याद किए जाएंगे। चोल कलाकार कांसे की ढलाई द्वारा धातुओं की मूर्तियों में शरीर की लयात्मक गति को दिखलाने की कला में सबसे आगे थे। अपनी कला से उन्होंने कांस्य की मूर्तियाँ और धातु की जटिल मूर्तियाँ बनाई। चोल वंशीय शासकों ने दक्षिण में बहुत–से प्रसिद्ध मन्दिरों का निर्माण कराया। इनमें **गंगकोण्डाचोलापुरम मन्दिर** तथा **ब हदेश्वर मन्दिर** सबसे अधिक महत्वपूर्ण और विशिष्ट हैं। ये मन्दिर अपनी सरलता (अकृत्रिमता), **स्मारकीय विशालता** तथा **राजसी गुणों** के लिए प्रसिद्ध हैं। **होयसल कला** भी बहुत महत्वपूर्ण थी। उसकी शैली अपनी जटिल कलात्मकता तथा विस्तार के लिए जानी जाती है। होयसल राजाओं के शासन के दौरान बहुत सारी **मन्दिर परियोजनाओं** को साकार रूप दिया गया। इस युग में निर्मित मन्दिरों की विशेषता यह है कि **मन्दिर की शिल्पकला एवं वास्तुकला में अच्छा समन्वय** किया गया है।

गंग वंशीय शासकों ने पूर्वी भारत में मन्दिर निर्माण की विभिन्न परियोजनाएं प्रारम्भ की। इन मंदिरों में उड़ीसा के **मुक्तेश्वर मन्दिर, लिंगराज मन्दिर** तथा **राजारानी मन्दिर** विशिष्ट रूप से स्मरण किए जाते हैं। इसी युग में कुछ प्रसिद्ध भारतीय मन्दिरों का निर्माण किया गया। उदाहरणार्थ, **कांचीपुरम, चेन्नाई, भुवनेश्वर, बांकुरा** तथा **बेलूर** एवं **हेलेविड** मन्दिर बहुत प्रसिद्ध हैं। इस युग तक कलाकार खुदाई तथा अन्य कलाओं में बहुत प्रवीण और निपुण हो गए थे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद, आप :

- सातवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी के बीच की कला का वर्णन कर सकेंगे;
- इस युग के कला बिन्दुओं एवं वस्तुओं को पहचान सकेंगे;

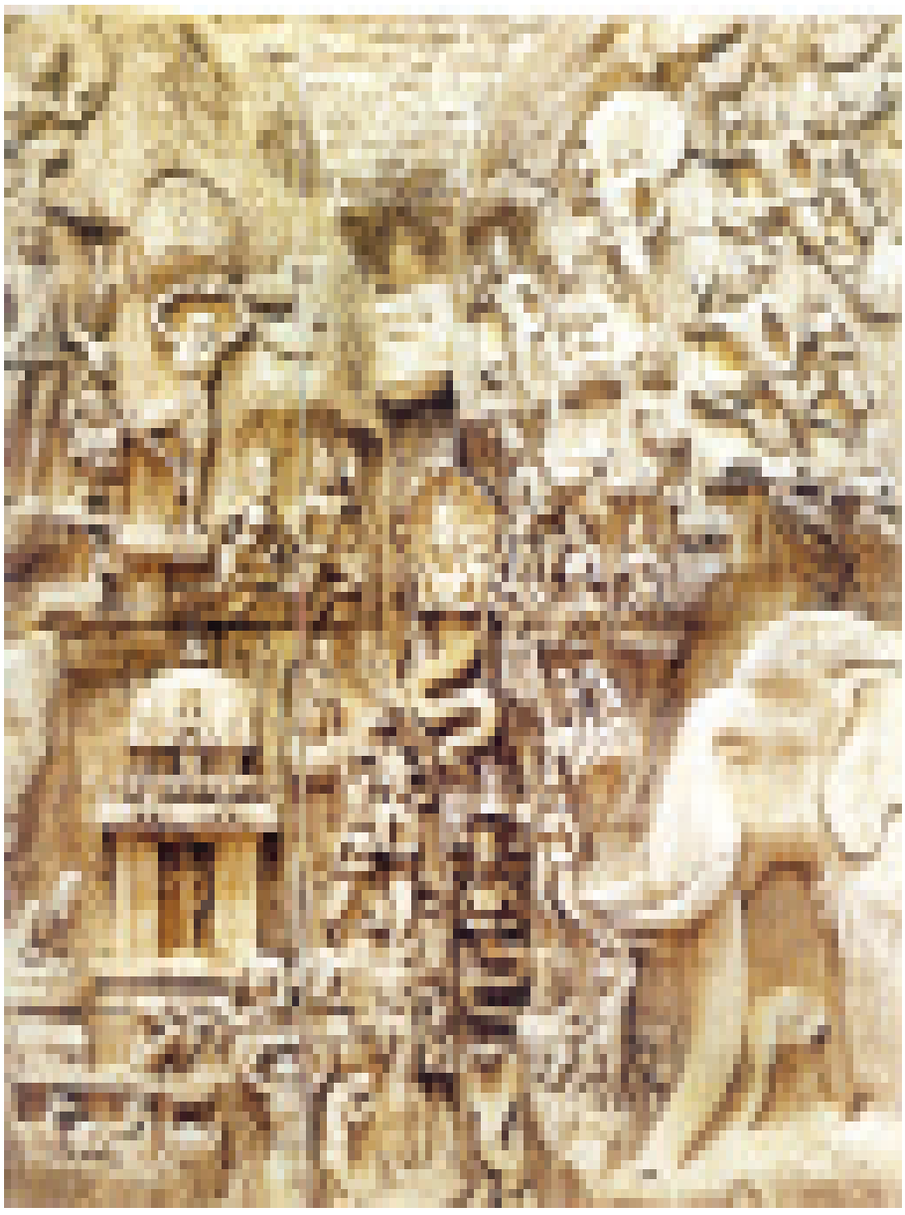

अर्जुन का चिन्तन अथवा गंगावतरण

टिप्पणी

- इस युग की कला के उद्देश्यों तथा वस्तुओं में अन्तर कर सकेंगे;
- इस युग की कला वस्तुओं की विशेषताओं को बता सकेंगे;
- इस युग की कला वस्तुओं के नामों की सुस्पष्ट रूप से पहचान कर सकेंगे।

2.1 अर्जुन का चिन्तन अथवा गंगावतरण

शीर्षक	:	अर्जुन का चिन्तन अथवा गंगावतरण
माध्यम	:	पत्थर
समय	:	पल्लव काल सातवीं शताब्दी (7th Century AD)
उपलब्धि स्थान	:	मामल्लपुरम (चेन्नई)
आकार	:	91फीट x 152 फीट (लगभग)
शिल्पकार (कलाकार)	:	अज्ञात

सामान्य विवरण

पल्लव वंशीय स्मारकों में गुफाओं के मन्दिर, मन्दिरों की इमारतें तथा कुछ एकाश्म ढांचे हैं। मामल्लपुरम में प्राप्त वास्तुकला का एक महत्वपूर्ण नमूना देखने को मिला है। यह भू–आकृति दो शिला–खण्डों पर उभरी हुई है। यह मूर्ति यद्यपि एकरूप (समतल) नहीं है, फिर भी उसकी प्रस्तुति स्पष्ट तथा स्वाभाविक एवं सहज है और सम्पूर्ण प्रस्तुति में एक प्रवाह है। इस मूर्ति में विभिन्न आकार के मनुष्य तथा पशुओं के एक झुंड के रूप में दिखाया गया है। इसमें देवता, अर्ध देव – (अंशावतार) तथा योगी, सभी को उड़ते हुए दिखलाया गया है। दो शिलाखण्डों के बीच एक दरार है। उसमें दिखलाई गई सभी आकृतियाँ इसी दरार की ओर देखते हुए खोदी गई हैं। इस उभरी हुई मूर्तिकला के ऊपरी हिस्से में काफी गति–विधियों तथा शक्ति का प्रदर्शन है परन्तु नीचे के हिस्से में जीवन में सब कुछ शान्त प्रतीत होता है। इसमें दिखाए गए योगियों को ध्यानमग्न अवस्था में दिखाया गया है। कुछ विद्वानों ने इस उभरी हुई मूर्तिकला को **गंगावतरण** का नाम दिया है जिसमें शंकर जी को प थ्वी पर आती गंगा की धारा के प्रवाह को अपनी जटाओं में रोकते हुए दिखाया गया है। उस दरार के दाहिनी ओर एक चतुर्भुजी आकृति दिखाई गई है जो अन्य आकृतियों से बड़ी है। इस आकृति को शंकर जी के कन्धों के ऊपर त्रिशूल के माध्यम से पहचाना जा सकता है। साथ ही उस आकृति के पास उनके शिष्य (अनुयायी) भी दिखाए गए हैं। कुछ अन्य लोगों का मत है कि इस आकृति को **अर्जुन के चिन्तन** के रूप में देखा जाना चाहिए क्योंकि इसमें एक पुरूष की आकृति एक तरफ ध्यानमग्न अवस्था में दिखाई गई है। वे लोग उसे अर्जुन मानते हैं। यह स्पष्ट रूप से पल्लव युगीय कलाकृति है क्योंकि इस मूर्ति में तीव्र गति तथा विशालता है। मूर्ति में पशुओं की विभिन्न विशेषताओं को दर्शाया गया है जो उस युग के कलाकारों की गहन और शोधपरक द ष्टि का परिचायक है। एक सोते हुए हाथी के बच्चे का चित्र, बन्दरों की आकृति, हिरन (म ग) का नाक खुजाना सभी कुछ कलाकार की सूक्ष्म द ष्टि के उदाहरण हैं। आकृतियों की कोमलता तथा उनकी गोलाई कलाकार की कुशलता के उदाहरण हैं। दीर्घ काल से दक्षिण में यह कृति भारतीय वास्तुकला की महान कृति मानी जा रही है।

पाठगत प्रश्न 2.1

(क) **'अर्जुन का चिन्तन'** कहां स्थित है?

(ख) किसके राजवंश में यह उभरी हुई मूर्तिकला बनी?

गोवर्धन पर्वत को उठाते हुए कृष्ण

टिप्पणी

(ग) **'अर्जुन का चिन्तन'** का दूसरा नाम क्या है?

(घ) इस उभरी हुई मूर्तिकला का माप क्या है?

2.2 गोवर्धन पर्वत को उठाते हुए कृष्ण

शीर्षक	:	गोवर्धन पर्वत को उठाते हुए कृष्ण
माध्यम	:	पत्थर
समय	:	होयसल काल
उपलब्धि स्थान	:	बेलूर
आकार	:	3 फीट
कलाकार	:	अज्ञात

सामान्य विवरण

होयसल युग में मन्दिर वास्तुकला बहुत प्रचलित थी। विस्त त मन्दिर वास्तुकला के अतिरिक्त प्रत्येक मन्दिर में मूर्तियों की वास्तुकला में आन्तरिक सजावट की जाती थी। दक्षिण के एक प्रसिद्ध राजवंश के नाम के आधार पर **होयसल शैली** का नाम पड़ा। इस राजवंश का उदय ग्यारहवीं शती के मध्य से हुआ और इसका अन्त चौदहवीं शती के मध्य में माना जाता है। आजकल के **हेलीबिड** नामक शहर को **होयसल वंश** की राजधानी माना जाता है। इस शहर का पहला नाम **द्वार समुद्र** था। होयसल शैली अपने में अपूर्व तथा अति विशिष्ट है। **बेलूर** में होयसल के मुख्य आदिकालीन मन्दिर मिलते हैं। होयसल मूर्तियों में गहरी खुदाई तथा गहरी तराश की कला देखने को मिलती है। साथ ही इन मूर्तियों में कोमलता तथा शरीर के अंगों की लयात्मकता तथा जटिल द श्य देखने को मिलते हैं। पत्थर की कोमलता के कारण गहरी कटाई सफल हो पाती है जिस कारण जटिल द श्यों की कटाई सरल हो जाती है। कृष्ण की मूर्ति **क्लिष्ट** और **सूक्ष्म** होयसल नक्काशी का सर्वोत्तम उदाहरण है। समस्त घटना को अलग–अलग परतों में दिखाया गया है। कृष्ण को मध्य में रखकर मुख्य पात्र दिखाया गया है तथा अन्य विभिन्न परतों पर पशु तथा अन्य मनुष्यों को दिखाकर एक मनोरंजक कथानक जैसा बन गया है। कृष्ण को यद्यपि नायक के रूप में दर्शाया गया है तथापि इस सारे द श्य में उनके खड़े होने की मुद्रा तथा उनके अंगों की **लयात्मकता** से सारे संयोजन में एक कोमलता का आभास होता है। पशुओं का सजीव चित्रण बहुत ही रोचक और आकर्षक लगता है। स्त्रियों के भारी स्तन तथा नितम्ब, गहनों का अलंकरण तथा विशिष्टतापूर्ण भारतीय केश विन्यास के साथ यह संयोजन होयसल शैली का विशिष्ट उदाहरण माना जाता है जिसमें पत्थर की सूक्ष्म रूप से की गई कटाई उस काल के कलाकारों की कुशलता को दर्शाती है।

पाठगत प्रश्न 2.2

(क) होयसल युग के किसी एक मन्दिर के स्थान का नाम बताइए।

(ख) हेलीबिड का पूर्व का नाम क्या था?

कोणार्क की सुरसुन्दरी

टिप्पणी

(ग) होयसल राजा कब शक्तिशाली हुए?

(घ) होयसल राज्य कहाँ था?

(ङ) जिस मूर्ति का जिक्र किया गया है, उसे कहां पाया गया?

2.3 कोणार्क की सुरसुन्दरी

शीर्षक	:	कोणार्क की सुरसुन्दरी
माध्यम	:	पत्थर
समय	:	गंग राजवंश (12वीं शती AD)
उपलब्धि का स्थान	:	कोणार्क, उड़ीसा
आकार	:	प्राकृत आकार से कुछ ज्यादा
कलाकार	:	अज्ञात

सामान्य विवरण

गंग वंश के राजा नरसिंह देव I ने उड़ीसा में पुरी के निकट भारतीय पूर्वी समुद्री तट पर कोणार्क में उड़िया वास्तुशास्त्र का सर्वोत्तम मंदिर **सूर्यमंदिर** बनवाया। इस युग में एक भिन्न प्रकार की वास्तुकला के उत्थान को देखा गया। यह मंदिर अपने विशाल ढांचे तथा प्राकृत आकार (आदमकद) के लिए प्रसिद्ध है। बड़ी मूर्तियां जो प्रायः काले पत्थर से बनी हैं, बंगाल की शैली से कुछ मिलती–जुलती हैं। प्रतिरूपण कुछ कसा हुआ है तथा कुछ चौड़े चेहरे पर मुस्कराहट है। कलाकृतियाँ मज़बूत हैं तथा बंधनमुक्त सौम्यता लिए हुए हैं। मन्दिर की मूर्ति मन्दिर के सौन्दर्य तथा सुरुचिसंपन्नता में व द्धि करती है। सूर्य की बड़ी प्रतिमा तथा नारी संगीतज्ञों की आकृतियां मंदिर की विशेषताओं में व द्धि करती हैं। इन मूर्तियों में एक मूर्ति प्राकृत आकार से कुछ बड़ी नारी की है, जो कि अन्य मूर्तियों की भांति ही है। ये नारी संगीतज्ञ नीचे और मध्य भाग के ऊपर चबूतरे पर बैठी हैं। वे पूर्ण विश्वास तथा प्रसन्नता से खेलती दिखाई देती हैं। इन संगीतज्ञों की आकृतियां बड़ी गहराई से तराशी गई हैं। इन मूर्तियों में गति तथा विशालता का आभास है। प्रत्येक नारी को एक अलग ही वाद्ययंत्र के साथ दिखाया गया है। सुरसुन्दरी के पास ड्रम है। मुस्कराहट भरा बड़ा चेहरा एवं बड़े आकार के बावजूद इस मूर्ति में एक लय है, गति है। अंगों की लयात्मकता के साथ सिर थोड़ा–सा झुका हुआ है। मूर्ति के इन सभी गुणों के कारण ड्रम बजाने वाली स्त्री सौंदर्ययुक्त एवं मोहक लगती हैं। स्त्री के वक्षस्थलों के बीच आभूषणों को कोमलता से गढ़ा गया है, जो उसके सौंदर्य में व द्धि करते हैं। मूर्तियों की वक्रता तथा झुकाव मूर्तियों में एक लयात्मकता प्रस्तुत करता है। इसी प्रकार वेश विन्यास तथा मुद्राएं प्रतिमा को सौन्दर्यपूर्ण तथा लयात्मक बनाती हैं।

पाठगत प्रश्न 2.3

(क) सुरसुन्दरी की प्रतिमा को क्या बजाते हुए दिखाया गया है?

(ख) कोणार्क के सूर्य मन्दिर को किसने बनवाया था?

(ग) कोणार्क का सूर्य मन्दिर कहाँ स्थित है?

(घ) यह प्रतिमा किससे बनी हुई है?

(ङ) कोणार्क का सूर्य मन्दिर किस राजवंश से सम्बन्धित है?

आपने क्या सीखा

गुप्त वंश के स्वर्णिम युग के बाद विभिन्न राजवंशों के शासन काल में कला तथा वास्तुकला की प्रगति होती रही। गुप्त काल के बाद कला सम्बन्धी गतिविधियों के केन्द्र दक्षिण तथा पूर्वी भारत की ओर स्थानांतरित हो गए। सातवीं शती (AD) में पल्लव वंशीय शासक शक्तिशाली हो गए। उनकी राजधानी **मामल्लपुरम** या **महाबलीपुरम** थी।

पल्लव वंशीय युग में **मामल्लपुरम** तथा **कांचीपुरम** कला के मुख्य केन्द्र बन गए। यही कारण है कि कला विषयक सर्वाधिक कार्य इन्हीं केन्द्रों में उपलब्ध हैं। कला के क्षेत्र में पल्लवों के समय की कुछ प्रसिद्ध कलाकृतियाँ महाबलीपुरम में उपलब्ध हैं। पंचरथ, अर्जुन का चिन्तन, मण्डप तथा उभरी हुई मूर्तिकला तथा कुछ और कलाकृतियाँ हैं जो पल्लवों के समय की हैं तथा महाबलीपुरम में उपलब्ध हैं। **पल्लवों** के बाद दक्षिण भारतीय क्षेत्र में जिन राजवंशों ने शासन किया उनमें **चालुक्य, चोल** तथा **होयसल** प्रमुख थे। पल्लव, **चालुक्य** तथा **चोल वंशीय मूर्तियाँ** कोमल एवं सौम्य थीं। मूर्तियों में ये गुण इससे पहले कभी नहीं देखे गए। **चोल युग** के कलाकारों ने कांस्य की मूर्तियों की तकनीक में निपुणता हासिल की। **होयसल काल** को पत्थर की मूर्तियों का युग माना जाता है। पत्थर पर बड़ी जटिल और सूक्ष्म नक्काशी तराशी गई है। ये मूर्तियां निपुणता से प्रदर्शित भाव–भंगिमाओं के लिए प्रसिद्ध हैं। मूर्तियों में लयात्मकता तथा गति इनके विशिष्ट आकर्षण हैं। इसी युग में मन्दिर वास्तुकला के उच्च स्तरीय नमूने देखने को मिलते हैं। मन्दिर वास्तुकला के अद्भुत उदाहरणस्वरूप कुछ मन्दिर इसी युग में देखने को मिलते हैं। इनमें से **हालेबिड** स्थित **होयसलेश्वर मन्दिर, केशव मन्दिर** तथा **सोमनाथ पुर के मंदिर** हैं। **पाल** तथा **सेन** राजवंश के बाद पूर्वी भारत में **गंग राजवंश** प्रमुख और प्रतिष्ठित राजवंश हुए। यह राजवंश अच्छे मन्दिर बनाने के लिए प्रसिद्ध हैं। इस राजवंश के शासकों ने ही उड़ीसा स्थित कोणार्क में शानदार राजसी **कोणार्क सूर्यमन्दिर** का

टिप्पणी

निर्माण कराया। इस मन्दिर में घोड़ों द्वारा खींचते हुए एक रथ बना है। यह मन्दिर उत्कृष्ट वास्तुकला तथा मूर्तियों के लिए विश्व में प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका है। यद्यपि इस मन्दिर की वास्तुकला बुरी तरह से ध्वस्त हो चुकी है परन्तु जो कुछ बचा है, वह उस युग के कलाकारों तथा उनकी कला की महानता को समझने के लिए काफी है।

पाठांत अभ्यास

1. 'अर्जुन का चिन्तन' नामक उभरी हुई मूर्तिकला के बारे में संक्षेप में लिखिए। वह कहाँ स्थित है?
2. कोणार्क का सूर्यमन्दिर कहाँ है? उसके विषय में संक्षेप में लिखिए।
3. कोणार्क मूर्तिकला की क्या विशेषताएं हैं।
4. होयसल युग की कृष्ण गोवर्धन मूर्ति के विषय में विशेष रूप से उल्लेख करने के लिए क्या है?
5. होयसल युग की मूर्तिकला की मुख्य विशेषताएं क्या हैं?
6. महाबलीपुरम में क्या है?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

2.1 (क) महाबलीपुरम या मामल्लपुरम

(ख) पल्लव राजवंश

(ग) गंगावतरण

(घ) लगभग 91 फीट x 152 फीट

2.2 (क) वेलूर

(ख) द्वार समुद्र

(ग) ग्यारहवीं शताब्दी

(घ) दक्षिण

(ङ) वेलूर

टिप्पणी

2.3 (क) ड्रम

(ख) नरसिंह देव–I

(ग) उड़ीसा

(घ) पत्थर

(ङ) गंग राजवंश